

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 21, डरने वाले से सावधान रहें, लूका 12:35-59

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 21 है। डरने वाले से सावधान रहें। लूका 12:35-59।

लूका के सुसमाचार पर बिब्लिका ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है। पिछले व्याख्यान में, हमने देखा कि कैसे यीशु ने किसी ऐसे व्यक्ति को उत्तर दिया जिसने विरासत को विभाजित करने की आवश्यकता पर प्रश्न पूछे थे और कैसे यीशु ने इसका उपयोग लालच के मुद्दों को कवर करने के लिए किया और सीधे इस मुद्दे पर पहुंचे कि सच्चे शिष्यों को सबसे पहले राज्य की तलाश करनी चाहिए, यह समझते हुए कि परमेश्वर ही वह है जो स्थायी प्रदान करेगा।

यहाँ, हम देखते हैं कि यीशु भविष्यसूचक मोड में आगे बढ़ते हैं और सावधान रहने की आवश्यकता को संबोधित करना शुरू करते हैं क्योंकि डरने वाला व्यक्ति अभी भी चिंता या भय के मुद्दे से निपट रहा है यदि आपको पिछली आयत याद है, तो उसने कहा कि मेरे छोटे झुंड से मत डरो, मेरे छोटे झुंड के लिए बहुत चिंतित या परेशान मत हो, लेकिन डरने वाले के रूप में और यहाँ आप अध्याय 12 की आयत 35 से 48 तक हाइलाइट करेंगे कि वास्तव में डरने वाला व्यक्ति न्याय का परमेश्वर है। मैंने लूका अध्याय 12 की आयत 35 से पढ़ा। कार्रवाई के लिए तैयार रहें और अपने दीपक जलाए रखें। वैसे, इस संबंध पर ध्यान दीजिए। वह कहते हैं कि आप क्या पहनते हैं और इस तरह की अन्य बातों की चिंता मत कीजिए।

लेकिन वह कहता है कि परमेश्वर तुम्हें देगा, और यदि तुम राज्य की खोज करोगे, तो ये सभी चीजें तुम्हें दी जाएंगी। और फिर वह यहाँ आगे कहता है कि ऐसे कपड़े पहने रहो जैसे कि परमेश्वर ने तुम्हें पहले ही दे दिए हैं। कपड़े पहने रहो और अपने दीये जलाए रखो। और उन लोगों की तरह बनो जो अपने स्वामी के विवाह भोज से घर लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि जब वह आए और दस्तक दे तो वे तुरंत उसके लिए दरवाजा खोल सकें धन्य हैं वे सेवक जिन्हें स्वामी आने पर जागता हुआ पाता है मैं तुमसे सच कहता हूँ वह सेवा के लिए खुद को तैयार करेगा और उन्हें मेज पर बैठाएगा। और वह आएगा और उनकी सेवा करेगा यदि वह दूसरे पहर या तीसरे पहर में आता है और उन्हें जागता हुआ पाता है। धन्य हैं वे सेवक। वैसे, यहाँ सेवक शब्द का अनुवाद दास के रूप में भी किया जाता है, लेकिन ध्यान दें कि यदि स्वामी, जिज्ञासु, घर का स्वामी, जानता होता कि चोर किस समय आ रहा है, तो वह अपना घर छोड़ देता वह अपने घर को सेंध लगाने के लिए नहीं छोड़ता।

तुम्हें भी तैयार रहना चाहिए, क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस समय आ रहा है जिसकी तुम उम्मीद नहीं करते। पद ४१ से, पतरस ने कहा, हे प्रभु, क्या तू यह दृष्टान्त हमारे लिये कहता है या सब के लिये? और प्रभु ने कहा, तो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान प्रबंधक कौन है, जिसे उसका स्वामी अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि समय पर उन्हें उनका भाग दे? धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा करते पाए। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह उसे अपनी सारी संपत्ति

पर सरदार ठहराएगा। परन्तु यदि वह दास अपने मन में सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर हो रही है, और वह दास-दासियों को पीटने लगे, और खाने-पीने और मतवाला होने लगे, जैसा कि तुम मूर्ख जमींदार से कल्पना कर सकते हो, तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उसकी बात न जोहता हो, और ऐसी घड़ी जब वह नहीं जानता हो, और उसे भारी दण्ड देकर विश्वासघातियों के संग डाल देगा।

और जो दास अपने स्वामी की इच्छा जानता था, परन्तु उसकी इच्छा के अनुसार तैयार न हुआ, और न चला, वह कड़ी मार खाएगा। परन्तु जो न जानता था, और मार खाने के योग्य काम करता था, वह हल्की मार खाएगा। देखो, वह अंग जो मैंने तुम्हारे लिये पीले रंग में रखा है।

जिस किसी को बहुत कुछ दिया गया है, उससे बहुत कुछ माँगा जाएगा। और जिस पर बहुत कुछ सौंपा गया है, उससे वे और अधिक की माँग करेंगे। यीशु यहाँ उस कल्पना के साथ आगे बढ़ रहे हैं जिसका उन्होंने पहले उल्लेख किया था, ताकि शिष्यों को तैयारी के कुछ क्षेत्रों के बारे में सोचना शुरू किया जा सके।

उन्हें उन चीजों से डरना नहीं चाहिए जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है, और उन्हें भविष्य के बारे में डर या चिंता में नहीं रहना चाहिए जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। इसके बजाय उन्हें सतर्क रहना चाहिए और प्रभु के आने पर अपनी तैयारी के बारे में डरना चाहिए। पहली छवि जो वह पेश करता है वह दासों और उनके स्वामियों की छवि है।

दासों से अपेक्षा की जाती है कि वे विवाह के लिए इतने तैयार रहें कि मालिक आने वाला है, और उन्हें नहीं पता कि मालिक कब आएगा। विचार यह है कि मालिक आधी रात को आ सकता है, लेकिन वह उम्मीद करेगा कि वे गेट पर ही होंगे ताकि जब वह प्रवेश करे तो वे गेट खोल सकें। इंग्लैंड में रहने के दौरान मुझे इस तरह का प्रोटोकॉल पसंद है जब आप कुछ शाही गतिविधियों को देखते हैं जो होने वाली हैं।

और फिर हम देखेंगे कि यहाँ यीशु दिखा रहे हैं कि तत्परता महत्वपूर्ण होने जा रही है क्योंकि तत्परता की कमी वास्तव में कुछ दंड की माँग करेगी या स्वामी से किसी प्रकार की सजा को प्रेरित करेगी। और फिर, बेशक, पतरस का सवाल अब पूरी चर्चा को एक और नेतृत्व के मुद्दे पर ले जाएगा जहाँ यीशु एक और कल्पना का उपयोग करेंगे। वह एक प्रबंधक की कल्पना का उपयोग करेंगे, जो उन दासों का मुखिया होता है जिन्हें स्वामी उनकी अध्यक्षता करने के लिए नियुक्त करता है।

फिर, यीशु इस संबंध में नेतृत्व के बारे में बात करेंगे, भण्डारीपन के रूप में और कैसे भण्डारी को अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए या जब स्वामी आता है, और कर्तव्य को अच्छी तरह से निष्पादित नहीं किया जाता है, तो उसे मार या दंड सहना चाहिए। डरने वाले से सावधान रहें। डरने वाला न्याय करने वाला परमेश्वर है।

वह ऐसे समय पर आता है जिसकी कोई उम्मीद नहीं करता। वह उम्मीद करता है कि जिन लोगों को ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे। तो जल्दी से, आइए इस अंश के पहले भाग को देखें।

मैं यहाँ दो बातों पर प्रकाश डालता हूँ। तत्परता का आह्वान, और, दो, स्वामी के अप्रत्याशित आगमन की कहानी। आइए तत्परता के आह्वान पर जल्दी से नज़र डालना शुरू करें।

यहाँ, हम पाते हैं कि यीशु इन छवियों का उपयोग करके तत्परता का आह्वान कर रहे हैं। अपनी कमर कस लो, पद 35। अपनी कमर कस लो या अपनी कमर कस लो।

यह आपके ढीले-ढाले गाउन को ऊपर उठाने की कल्पना है, ताकि आपके पैर दौड़ने के लिए स्वतंत्र हों। मैं आपको स्क्रीन पर निर्गमन 12, श्लोक 11 की कल्पना देता हूँ। यह वह अंश है जो इस बारे में बात करता है कि हिब्रू लोगों को कैसे तैयार रहना चाहिए जबकि वे फसल की दावत के लिए खाना खाते हैं और तैयारी करते हैं ताकि वे आगे बढ़ सकें।

तत्परता की भावना। वह कहते हैं, तैयार हो जाओ। आपको इस तरह की तत्परता और तैयारी पर नज़र रखने की ज़रूरत है ताकि आप स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकें।

अपना प्रकाश प्राप्त करो, कहीं ऐसा न हो कि इतना अँधेरा हो कि तुम आगे न बढ़ सको। फिर, एक अप्रत्याशित आने वाले सेवक के बारे में कहानी में, यीशु दासों को कैसे प्रतीक्षा करने की आवश्यकता थी, इस दृष्टांत में कुछ ज्वलंत चित्र लाना शुरू करेंगे। यहाँ, हम महसूस करते हैं कि प्रभु पर यीशु का जोर उन्हें प्रजा को दास के रूप में चित्रित करने के लिए प्रेरित करेगा।

स्वामी को कुरियोस, भगवान कहा जाएगा। और फिर प्रजा को दास कहा जाएगा। और फिर, हम देखेंगे कि वह दासों को विवाह भोज में स्वामी की प्रतीक्षा करने वालों के रूप में चित्रित करेगा।

मालिक को दरवाज़ा खोलने के लिए खुद गेट को छूना नहीं चाहिए। दासों को बस तैयार रहना चाहिए ताकि जैसे ही वह वहाँ पहुँचे, वे उसके लिए दरवाज़ा खोल दें। इसके लिए सटीकता और प्रभावशाली तत्परता की आवश्यकता होती है।

अगर आप चाहें तो, स्वामी के आने की प्रतीक्षा में स्पष्ट सतर्कता बरतें। आप देखिए, हम यहाँ पद 37 में देखते हैं कि लूका हमें दृष्टांत में क्या बता रहा है जैसा कि यीशु कहते हैं। यीशु कहते हैं कि जब स्वामी आएगा, और नौकर तैयार होंगे, तो स्वामी खुद यही करेगा।

स्वामी स्वयं तैयार हो जाएगा, और जब वह मेज़ पर आएगा क्योंकि दास या नौकर बहुत तैयार हैं, तो स्वामी पीछे मुड़कर दासों की सेवा करेगा। यह उल्लेखनीय है। वास्तव में, यीशु इस दृष्टांत में कह रहे हैं कि जो लोग प्रभु के आने के लिए तैयार हैं, प्रभु स्वयं, पीछे मुड़कर उनकी सेवा में होंगे।

लेकिन यह भी सच है कि उन्हें पता होना चाहिए कि उस मेज़ पर उन्हें जो इनाम, सम्मान और आदर दिया जाएगा, वह तभी साकार होगा जब वे समझेंगे कि मालिक का आना अप्रत्याशित है। वह किसी भी समय आ सकता है। वह किसी भी समय शादी के भोज में प्रवेश कर सकता है।

और जब वह प्रकट होता है, तो उन्हें तैयार रहना चाहिए। यीशु यह क्यों कह रहा है? यीशु उन्हें शिष्यत्व और परमेश्वर के राज्य में एक सच्चे शिष्य बनने की तत्परता के संदर्भ में चुनौती दे रहा

है। उस तत्परता के लिए किसी भी घंटे, किसी भी मिनट, किसी भी सेकंड में स्वामी की आज्ञा का पालन करने के लिए सतर्कता की भावना की आवश्यकता होती है।

मुझे लगता है कि इस विशेष दृष्टांत का सबसे बढ़िया हिस्सा तब है जब दासों का इंतज़ार कर रहे स्वामी का आगमन होता है। और स्वामी, दासों को पुरस्कृत करते हुए, दासों की सेवा करता है। आप जानते हैं, मुझे जॉन अध्याय 21 में एक अंश याद है।

पुनरुत्थान के बाद, यीशु आए, और शिष्य यहूदिया से भाग गए, और वे मछली पकड़ने के लिए गलील वापस चले गए। उन्होंने सारी रात मछली पकड़ने में बिताई। यूहन्ना 21 में उन्हें कुछ भी नहीं मिला।

और यह उन अंशों में से एक है। जब भी मैं प्रभु यीशु के चरित्र के बारे में सोचता हूँ, तो यह मुझे उलझन में डाल देता है। इसीलिए मैं यहाँ इस पर थोड़ा सा चर्चा कर रहा हूँ। यीशु इसमें शामिल हैं।

ये वे लोग हैं जो वास्तव में दर्शन को मार रहे थे। मूल रूप से, वे अपने पिछले काम पर लौट आए थे, यह सोचकर कि यीशु की गिरफ्तारी और मृत्यु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में उनके सपने को मार दिया है। और फिर भी, जब यीशु वहाँ गए, तो उन्होंने उन्हें दूर झील पर देखा।

उन्हें एहसास हुआ कि वे भूखे हैं। यीशु ने खुद उनके लिए नाश्ता बनाया। और फिर, जब वे किनारे पर आए, तो यीशु ने खुद उन्हें खाना खिलाया।

मैं चर्च में कुछ ऐसा कहना पसंद करता हूँ कि, अगर मैं यीशु होता और उस विशेष घटना पर पीटर जैसे लोगों को खाना खिलाता, तो मैं नाश्ता प्लेट में रखता जैसे मैं यहाँ अपनी बाइबल खोलता हूँ। और जब मैं पीटर के पास जाता, तो मैं कहता, पीटर, नाश्ता, सर। और जैसे ही वह इधर-उधर घूमता, मैं उसे उसके मुँह पर रख देता।

क्योंकि वह वही है जो खड़ा हुआ और बोला, मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ। सभी ने अपना काम रोक दिया और मिशन से भटकने के लिए उसका अनुसरण किया। लेकिन आप देखिए, इस दृष्टांत में, यीशु हमें उस तरह की तस्वीर दे रहे हैं।

मालिक अंदर आता है, और दास, जो अपने काम में बहुत सतर्क थे, खुद मालिक को मेज पर उनकी सेवा करते हुए पाते हैं। सम्मान और शर्म के समाज में, आप दासों को दिए जाने वाले सम्मान और गरिमा के उच्चतम रूप के बारे में बात कर रहे हैं। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है।

जो लोग सतर्क और तैयार हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा। आप देखिए, लेकिन उन्हें पता होना चाहिए कि अप्रत्याशित आगमन किसी जगह पर चोर के आने जैसा होगा। और अगर कोई जानता है कि चोर कब आ रहा है, तो वे तैयार रहेंगे।

लूका में जिस चोर की छवि का इस्तेमाल किया गया है, वह नई नहीं है। हम इसे मत्ती 24, आयत 43, 1 थिस्सलुनीकियों 5:2, 2 पतरस 2:3, 10 में पाते हैं। हम प्रकाशितवाक्य 16, आयत 15 में भी यही छवि पाते हैं।

तो यह कोई नई बात नहीं है। लेकिन ध्यान दें कि यीशु यहाँ किस बात पर ज़ोर दे रहे हैं। वह आएंगे।

और वह रात में चोर की तरह आएगा। शिष्यों को तैयार रहना चाहिए। शिष्यों को तैयार रहना चाहिए।

मुझे जोएल ग्रीन के शब्द पसंद हैं। मैं जोएल ग्रीन की टिप्पणियों को पढ़कर उनसे प्यार करने लगा हूँ। ग्रीन इसे इस तरह कहते हैं।

आप देखिए, स्वामी की स्थिति उलट जाती है, ताकि वह अपने दासों की ओर से दासतापूर्ण कार्यकलापों में संलग्न हो जाए। हालाँकि, यीशु उन्हें अब स्वामी के रूप में चित्रित करने के लिए इतना आगे नहीं बढ़ते हैं। इसके बजाय, वह सामान्य घरेलू परंपराओं के स्थान पर स्थिति चेतना के साथ अति-चिंता द्वारा शासित, ईश्वर के घराने की स्थापना करते प्रतीत होते हैं।

स्थिति और भूमिकाओं के मुद्दों के संबंध में अंधेपन की विशेषता जो उनके साथ होती है। यीशु अपने श्रोताओं को अंतिम समय का एक दर्शन प्रदान करता है, एक घरेलू वास्तविकता जिसमें स्थिति के पदानुक्रम को शून्य कर दिया जाता है। इस दर्शन के साथ, वह न केवल वफादारों की प्रतीक्षा कर रहे इनाम की प्रकृति की घोषणा करता है बल्कि अपने श्रोताओं को अंतरिम और अंतिम समय में निष्ठा की प्रकृति के बारे में सचेत करता है।

यीशु उन शिष्यों को बुला रहे हैं। अपनी प्राथमिकताओं को सही जगह पर रखें और उस व्यक्ति की तलाश में तैयार रहें जिससे आपको डरना है, और आपको सम्मानित किया जाएगा। लेकिन पतरस का सवाल यीशु के लिए बहुत उलझन भरा था।

जब पतरस ने पलटकर यीशु से यह सवाल पूछा, तो वह 41 साल का था और उसने कहा, वैसे, यीशु, क्या आप वास्तव में हमसे बात कर रहे हैं, या आप उन सभी से बात कर रहे हैं? मेरा मतलब है, आप यहाँ जो कह रहे हैं वह काफी पेचीदा है। मेरा मतलब है, आप हमें कुछ खास काम करने के लिए चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं। क्या आपका मतलब है कि यह हमारे बारे में है या उन सभी के बारे में? अब यीशु कहते हैं, मैं तुम्हें एक और दृष्टांत बताता हूँ।

इस दृष्टांत के अंग्रेजी अनुवाद में, हम प्रबंधक शब्द से मिलते हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यूनानी शब्द का अनुवाद प्रबंधक के रूप में किया जाना चाहिए। यह कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो दास हो या कोई भी व्यक्ति जो घर में मदद करता हो, जिस पर मालिक भरोसा करता है कि उसकी अनुपस्थिति में, वह इस व्यक्ति को अपनी संपत्ति का संरक्षक नियुक्त कर सकता है।

अगर उसके पास कोई व्यवसाय है, तो यह व्यक्ति उसे चलाएगा। यह कुछ ऐसा है जो व्यक्ति पर बहुत अधिक ध्यान देने और उस पर भरोसा करने के आधार पर दिया जाता है। यीशु इसका

इस्तेमाल पतरस और बाकी लोगों को यह बताने के लिए करेंगे कि परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व करना भी दायित्व की भावना के साथ आता है।

निष्ठा की आवश्यकता है और अपने कर्तव्य को इस तरह से निभाने की आवश्यकता है कि जब डरने वाला आए, तो न्याय करने वाला परमेश्वर आए। न्याय करने वाला परमेश्वर कठोर न्याय करने के लिए नहीं उठेगा, लेकिन जैसा कि हमने पिछले दृष्टांत में देखा, प्रभु, स्वामी, वफादार सेवकों की सेवा करने के लिए भी तैयार रहेगा। आप देखिए, यहाँ पतरस का प्रश्न कुछ बातें उठाता है, और मैं दृष्टांत के उस भाग से छह बातें उजागर करता हूँ।

यीशु अब विषय को नेतृत्व पर लाते हैं क्योंकि प्रेरितिक दल का एक सदस्य आवेदन पर प्रश्न पूछता है। जब यीशु ने प्रबंधक शब्द का प्रयोग किया, तो वह जरूरी नहीं कि किसी बाहरी व्यक्ति के बारे में बात कर रहा था जिसे लाया गया हो, बल्कि जैसा कि दृष्टांत से पता चलता है, वह उन दासों में से एक के बारे में बात कर रहा था जिसे उठाया गया था और उस पर भरोसा किया गया था कि वह उस जिम्मेदारी को संभाल सकता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के राज्य में, हम सभी समान हैं।

हमें कुछ नेतृत्व संबंधी जिम्मेदारियाँ दी जा सकती हैं और उन्हें सौंपा जा सकता है, और इसके साथ ही, बड़ी जवाबदेही की आवश्यकता होती है। हम देखते हैं कि जब स्वामी कब्ज़ा सौंप रहा था, तो स्वामी ने उसका कुछ हिस्सा नहीं सौंपा; स्वामी ने सब कुछ अर्थशास्त्री, प्रबंधक की देखभाल में सौंप दिया। प्रबंधक से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वामी के उस पर विश्वास के संबंध में एक अनुरूप प्रतिक्रिया दे।

अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करना, एक वफादार सेवक के रूप में सेवा करना, स्वामी के सम्मान में उसका प्रतिनिधित्व करना। यहाँ इस दृष्टांत में, यीशु स्पष्ट रूप से बात कर रहे हैं, यह भी जानते हुए कि कुछ प्रबंधक अपने पद का दुरुपयोग करने की संभावना रखते हैं, इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि निष्ठा को आशीर्वाद और पदोन्नति मिलेगी। जो नेता अपना काम करते हैं और अपना काम अच्छी तरह से करते हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन पुरुष दासों और महिला दासों या खाने-पीने के मामलों में संसाधनों के मामले में विषयों का दुरुपयोग करने वालों को दंडित किया जाएगा।

लेकिन स्वामी यह कहने में काफी निष्पक्ष है कि जब वह आएगा, तो वह वास्तव में लोगों को उनके कार्य विवरण के संबंध में ज्ञान के स्तर के अनुसार दंड देगा। यीशु, वास्तव में, इन दृष्टांतों में कुछ बहुत ही दिलचस्प कर रहे हैं। वह दिखा रहे हैं कि, सबसे पहले, जो दास या सेवक वफादार हैं, वे उस स्वामी के सामने अपमान पाएंगे जो उनकी सेवा भी करेगा।

हालाँकि, परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व को दुर्व्यवहार के मुकाबले श्रेष्ठ स्थिति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। याद रखें, ठीक पहले के दृष्टांत में, यीशु ने पहले ही शक्ति और स्थिति के मुद्दों को उलट दिया था क्योंकि उसने बताया कि कैसे स्वामी स्वयं मुड़कर मेज पर दासों की सेवा करेगा। यहाँ, यदि पतरस को जानने में रुचि है, तो वह पतरस को याद दिला रहा है कि यदि वह एक प्रेरित के रूप में अपना काम अच्छी तरह से करता है तो निष्ठा को पुरस्कृत किया जाएगा।

लेकिन अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो न्याय का परमेश्वर आएगा और न्याय का परमेश्वर उनका न्याय करेगा। यही से यीशु लूका 12, श्लोक 49-59 में निर्णय के लिए आह्वान करते हैं। मैंने पढ़ा, मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और चाहता हूँ कि यह पहले से ही जल रही हो।

मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक यह पूरा न हो जाए, तब तक मेरा संकट कितना बड़ा है। क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूँ? नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, बल्कि विभाजन लाने आया हूँ। अब से, एक घर में पाँच लोग विभाजित होंगे, तीन दो के विरुद्ध, दो तीन के विरुद्ध।

पिता पुत्र के विरुद्ध, पुत्र पिता के विरुद्ध, माता पुत्री के विरुद्ध, पुत्री माता के विरुद्ध, सास पुत्रवधू के विरुद्ध, और पुत्रवधू सास के विरुद्ध फूट डालेगी। श्लोक 54. उसने भीड़ से यह भी कहा, “जब तुम पश्चिम में बादल को उठते देखते हो, तो तुरन्त कहते हो, वर्षा आने वाली है।”

और ऐसा ही होता है। और जब आप हल्की हवा चलती देखते हैं, तो आप कहते हैं, बहुत गर्मी पड़ेगी। और ऐसा ही होता है।

हे कपटियों, तुम पृथ्वी और आकाश के स्वरूप का भेद जानते हो। फिर वर्तमान समय का भेद क्यों नहीं जानते? और तुम अपने आप न्याय क्यों नहीं करते? जब तुम अपने मुद्दई के साथ न्यायी के पास जाओ, तो रास्ते में उससे समझौता कर लो, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें घसीटकर न्यायी के पास ले जाए, और न्यायी तुम्हें सिपाही को सौंप दे, और सिपाही तुम्हें बन्दीगृह में डाल दे। मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक तुम अन्तिम दाम न चुका दोगे, तब तक तुम छूट न पाओगे।

यीशु इन शिष्यों को निर्णय के लिए बुलाते हैं। और ऐसा लगता है कि उन्हें पता है कि पतरस को दिया गया उनका दृष्टांत अच्छा नहीं होगा। जब उन्होंने उसे बताया कि प्रबंधक को अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह से निर्वहन करना चाहिए, तो निष्ठा को पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन गैर-जिम्मेदार नेतृत्व को दंडित किया जाएगा।

अब, वह वास्तव में इस प्रमुख कथन को प्रस्तुत करता है जिसने कुछ विद्वानों को आश्चर्यचकित कर दिया है कि यहाँ क्या हो रहा है। यीशु ने कहा कि मैं विभाजन लाने आया हूँ। और इसमें, वह इस बात का भावुक दावा करेगा कि वह क्यों आया।

फिर, वह दिखाएगा कि, वास्तव में, वह रिश्तेदारी समूह की गतिशीलता में शांति लाने के लिए नहीं आया है। वह सभी परिस्थितियों में परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे के साथ बहुत सहज या बहुत सहज बनाने के लिए नहीं आया है। उसके राज्य के फैसले इतने मार्मिक होने जा रहे हैं कि लोगों को ऐसे फैसले लेने की आवश्यकता होगी जो रिश्तों को प्रभावित कर सकते हैं।

यीशु का अनुसरण करने में प्राथमिकता कुछ लोगों को उनकी इच्छा और अपने परिवार के नेटवर्क से जुड़े रहने की आवश्यकता से वंचित कर सकती है। यीशु उन्हें चुनौती देते हैं और इस तथ्य के बारे में आलोचना करते हैं कि उनके पास मौसम की व्याख्या करने की क्षमता है। और वे यह भी जान सकते हैं कि बारिश आने वाली है या गर्मी आने वाली है।

लेकिन ऐसा लगता है कि उनके पास परमेश्वर के राज्य के विज्ञान के बारे में पढ़ने की क्षमता नहीं है। परमेश्वर का राज्य निकट है और उन्हें प्रतिक्रिया देनी होगी और निर्णय लेना होगा। जब यीशु आग की कल्पना करते हैं, तो हम जानते हैं कि बाइबल में कई, कई उदाहरणों के संबंध में यहाँ-वहाँ आग की कल्पनाएँ की गई हैं।

इनमें से एक, मुझे लगता है, यह है कि जॉनसन जिस तरह से इसे चित्रित करते हैं, वह इस पाठ को पढ़ने के हमारे तरीके को पूरक करता है। ल्यूक के सुसमाचार की टिप्पणी में, टिमोथी जॉनसन लिखते हैं, आग की छवि पैगंबर एलिजा की याद दिलाती है, जिन्होंने बाल के नबियों और राजा आहाज के सैनिकों के खिलाफ प्रभु से आग बरसाई थी। यीशु के शिष्य अध्याय 9, श्लोक 54 में सामरियों के खिलाफ इस तरह का प्रतिशोध करना चाहते थे, लेकिन उन्होंने इसकी अनुमति नहीं दी।

यदि भविष्यसूचक पृष्ठभूमि इस कथन को नियंत्रित करती है कि यीशु उस युगान्तिक न्याय की इच्छा रखते हैं जिसका वादा यूहन्ना ने किया था, तो जो पेड़ फल नहीं देगा उसे आग में काट दिया जाएगा। भूसा न बुझने वाली आग में मजबूत होता है। न्याय के साधन के रूप में आग अध्याय 17, श्लोक 29 में बार-बार आती है।

दूसरी ओर, लूका ने इसे प्रेरितों के काम 2:3 में पवित्र आत्मा के उपहार के साथ भी जोड़ा है, जैसा कि हम लूका 3:16 में यूहन्ना की सेवकाई के संदर्भ में देखते हैं। लेकिन आप देखिए, जब यीशु अपनी भावुक अपील में आता है, तो वह स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है कि वह आग और न्याय लाने के लिए आया है, जिसके कारण लोगों को कट्टरपंथी शिष्यत्व के लिए निर्णय लेने पड़ते हैं। उसे एक बपतिस्मा लेना है। बपतिस्मा क्या है? इस बपतिस्मा की प्रकृति के बारे में कुछ विचार व्यक्त किए गए हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि बपतिस्मा की भाषा आपदा को संदर्भित करती है या यह यीशु की अपनी मृत्यु को संदर्भित करती है। दूसरों ने इसे पित्तकुस्त के दिन आत्मा के बपतिस्मा से जोड़ा है। दूसरों का कहना है कि यह दोनों का संयोजन हो सकता है।

मैंने इसे इस तरह पढ़ा कि यीशु कह रहे हैं कि उनके सामने कुछ चुनौतियाँ हैं, अगर आप चाहें तो कुछ विपत्तियाँ झेल सकते हैं या फिर आगे मौत से गुज़र सकते हैं। और राज्य का काम कोई मज़ाक नहीं है। वे सस्ती शांति, शांति की एक तरह की सस्ती समझ देने नहीं आए हैं।

वह विभाजन लाने आया है। यीशु यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर के राज्य में परिवार के सदस्य परिवार के सदस्य नहीं रह जाते। दूसरी ओर, यीशु कह रहा है कि परमेश्वर के राज्य में, राज्य की प्राथमिकताओं को राजत्व की प्राथमिकताओं से ऊपर होना चाहिए।

हम थॉमस के सुसमाचार में इस तरह की शिक्षा का एक समानांतर पाते हैं। मुझे कहना होगा कि थॉमस का सुसमाचार हमारी बाइबल में नहीं है। यह अपोस्टोलिक फादर्स या कुछ छद्मलेखीय लेखन में से एक में है।

इसलिए, जो लोग इससे परिचित नहीं हैं, उनके लिए मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि यह बाइबल का हिस्सा है। मैं सिर्फ यह सुझाव दे रहा हूँ कि शुरुआती ईसाइयों के पास इस तरह के पाठ तक पहुँच थी। उस पाठ की परंपरा यहाँ जो हम देख रहे हैं, उससे मेल खाती है।

थॉमस के सुसमाचार 16 में हम पढ़ते हैं, यीशु ने कहा, शायद लोग सोचते हैं कि मैं दुनिया पर शांति लाने आया हूँ। लेकिन वे नहीं जानते कि मैं धरती पर स्वर्गारोहण, आग, तलवार, युद्ध लाने आया हूँ। क्योंकि एक घर में पाँच लोग होंगे।

तीन दो के विरुद्ध होंगे, और दो तीन के विरुद्ध होंगे, और पिता पुत्र के विरुद्ध होगा, और पुत्र पिता के विरुद्ध होगा, और वे एकान्त में खड़े होंगे। यदि तुम मेरे शिष्य बन जाते हो, जैसा कि मैंने तुम्हारे लिए रेखांकित किया है, यदि तुम मेरे शिष्य बन जाते हो और मेरी बातों पर ध्यान देते हो, तो ये पत्थर तुम्हारी सेवा करेंगे, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में पाँच पेड़ हैं। वे गर्मी या सर्दी नहीं बदलते, और उनके पत्ते कभी नहीं झड़ते।

जो कोई उन्हें जानता है, वह मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा। दूसरे शब्दों में, यीशु कहते हैं, मैं न्याय के लिए आया हूँ। मैं कट्टरपंथी शिष्यत्व का आह्वान करता हूँ, और जो लोग इस कट्टरपंथी शिष्यत्व पर ध्यान देते हैं, उनके लिए एक बेहतर स्थान होगा, उनके लिए अंतिम समय में एक सम्मानजनक स्थिति होगी।

यीशु शांति के लिए नहीं आते। द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म या यहूदी संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं को अब यहाँ जांच के दायरे में लाया गया है। उनका कहना है कि पिता और पुत्र के बीच का रिश्ता भी तब खराब हो सकता है जब कोई राज्य के बारे में निर्णय लेता है, और दूसरा उसमें भाग लेना नहीं चाहता।

आपको पता होना चाहिए कि शिष्यत्व के लिए यह कट्टरपंथी आह्वान नया नहीं है। कुरान में, संत समुदाय, सभी पुरुष संप्रदाय, यहां तक कि रेगिस्तान में बसने और अपने दोस्तों के साथ रहने का फैसला भी करेंगे। यीशु प्राथमिकता के लिए आह्वान कर रहे हैं, न कि आपके पारिवारिक संबंधों को पूरी तरह से खत्म करने के लिए।

यहाँ जिस विभाजन की बात वे कर रहे हैं, वह विभाजन प्राकृतिक रिश्तेदारी को नष्ट करने वाला विभाजन नहीं है। नहीं, यहाँ जिस विभाजन की वे बात कर रहे हैं, वह राज्य के बारे में निर्णयों पर सहमति न होने के संदर्भ में विभाजन है। प्रेरितों के काम से हम जानते हैं कि घराने बचाए जाएँगे।

लेकिन क्या होगा अगर घर के सदस्य यीशु का अनुसरण नहीं करना चाहते? आप देखिए, यहाँ जिन नामित रिश्तों का जिक्र किया गया है, वे उस समय के नातेदारी में सदस्यों के सबसे करीबी रिश्ते हैं। यीशु फिर भी कहते हैं कि वह चाहते हैं कि वे उन रिश्तों से ज़्यादा परमेश्वर के राज्य के रिश्ते को प्राथमिकता दें। लेकिन जैसा कि मैंने पहले के एक व्याख्यान में कहा था और उस विशेष सत्र में और विस्तार से बताया था, क्या यीशु सुझाव देते हैं कि काल्पनिक रिश्तेदारी, दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के राज्य में पारिवारिक गतिशीलता, प्राकृतिक रिश्तेदारी, हमारे प्राकृतिक पारिवारिक रिश्ते से ऊपर होनी चाहिए? नहीं।

लेकिन मुझे यह भी स्पष्ट करना होगा कि ऐसे विद्वान भी हैं जो इस पर मुझसे असहमत हैं। कुछ विद्वानों का तर्क है कि यीशु की शिक्षाओं में, काल्पनिक रिश्तेदारी प्राकृतिक संबंधों को खत्म करने के लिए आई है। इसलिए, चर्च के सदस्य एक नया परिवार बन जाते हैं।

और वह उनका परिवार बन जाता है, उनका पहला और सबसे महत्वपूर्ण परिवार। अब मैं इसके खिलाफ तर्क देता हूँ। मेरा मानना है कि हमने देखा है कि यीशु उन लोगों से मिलने और उनके साथ शामिल होने गए जिन्हें अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करने की ज़रूरत थी।

उसने उन्हें अपने परिवार को छोड़कर उनके पीछे चलने के लिए नहीं बुलाया। लेकिन पतरस जैसे कट्टरपंथी शिष्यत्व में, हम जानते हैं कि जब पतरस ने सब कुछ छोड़कर यीशु के पीछे आने और उसका अनुसरण करने के लिए कदम बढ़ाया, तो उसने अपनी पत्नी को पीछे छोड़ दिया। इसका मतलब यह नहीं है कि उसने शादी करना छोड़ दिया।

मैं यीशु की सेवकाई में कोई पैटर्न नहीं देखता, तब भी जब वह पिताओं के बारे में बात करता है जो अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा जानते हैं। मैं उसे प्राकृतिक संबंधों को कमतर आंकते हुए नहीं देखता, बल्कि मैं उसे रिश्तेदारी की संवेदनाओं की अपील करते हुए देखता हूँ जिसे लोग एक बड़ा मुद्दा बनाने के लिए जानते हैं। लोगों के बीच रिश्तेदारी, भाई-बहन, पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चे, ससुराल वाले, सास-ससुर और बहू के रूप में प्राकृतिक रिश्तेदारी के संबंधों को समझना।

ये सारे रिश्ते, उनके बीच के बंधन, प्राथमिकता, और इस रिश्ते में निहित भावना और वफ़ादारी की भावना, यही सब कुछ है जो यीशु के कहने का आशय है। प्रतिबद्धता की उन भावनाओं को राज्य और उसके कामों में वापस लाया जाना चाहिए। इस अर्थ में, प्राथमिकता ही दांव पर लगी है और मेरे विचार से इसे समाप्त नहीं किया जाना चाहिए।

कुछ विद्वानों ने पहले कहा है, मुझसे असहमत होने के लिए तीखे ढंग से लिखा है। मैंने इस विषय पर थोड़ा काम किया है, और मैं आपको बता सकता हूँ कि कुछ लोग यह कहने के लिए उत्सुक हैं कि यीशु सांसारिक परिवार के बारे में बहुत परवाह नहीं करता है क्योंकि वह अपनी शिक्षाओं में सुसंगत है। मैं बस आपको यह बताना चाहता हूँ कि जिस तरह से मैं इसे पढ़ता हूँ, वह यह है कि यीशु कह रहे हैं कि निर्णय लेने का तरीका यह है।

अपनी प्रतिबद्धता, निष्ठा और वफ़ादारी के स्तर पर राज्य के मामलों को पहले चुनें, न कि अपने स्वाभाविक पारिवारिक संबंधों को अलग करें। दूसरे शब्दों में, मैं यीशु को यह कहते हुए नहीं सुनता, कि यदि आप पति हैं और आप मसीह के अनुयायी बन जाते हैं, तो आपके पास अपने परिवार को त्यागने का हर अच्छा कारण है। एक पिता के रूप में, एक पति के रूप में, या यदि आप एक पत्नी हैं, तो अपनी ज़िम्मेदारियों से दूर रहने के लिए आप मसीह के अनुयायी बन जाते हैं, और आपके पास अपने पारिवारिक संबंधों को त्यागने या उनसे दूर रहने का हर कारण है।

शायद इसलिए क्योंकि आपके परिवार के कुछ सदस्य मसीह के अनुयायी नहीं हैं। नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि यीशु यहाँ यही कह रहे हैं। प्रतिबद्धता और वफ़ादारी को प्राथमिकता दें, साथ ही परमेश्वर और राज्य के प्रति वफ़ादारी को भी प्राथमिकता दें।

और यदि आप इसे प्राथमिकता देते हैं, जैसा कि उन्होंने पहले भी कहा था, तो अन्य चीजें भी जुड़ जाएंगी। लेकिन राज्य को किसी की प्रतिबद्धता के स्तर में गौण नहीं होना चाहिए, जैसा कि उन्होंने बताया है। क्योंकि जो व्यक्ति न्याय करने आता है, उससे डरना चाहिए और वह पूर्ण निष्ठा की मांग करता है जिसके लिए टीम के प्रति सतर्कता और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

आप देखिए, मौसम की व्याख्या करने की क्षमता लोगों को पता है। और अगर ये वही लोग हैं जिन्हें इस बात का अच्छा ज्ञान है कि बारिश कैसे आने वाली है या मौसम कैसे बदलने वाला है, लेकिन वे मनुष्य के पुत्र के आने को नहीं पढ़ सकते, तो यह एक समस्या है। यही कारण है कि किसी को यह स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है कि राज्य के व्यवसाय में यीशु पाखंड को बर्दाश्त नहीं करने वाला है।

वह उन लोगों को पाखंडी कहता है जो सोचते हैं कि वे मौसम को पहचान सकते हैं लेकिन मनुष्य के पुत्र के आने के संकेतों की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं। आने वाला न्यायी परमेश्वर है। उन्हें उससे डरना चाहिए।

जैसा कि ग्रीन कहते हैं, अगर वे यीशु की सेवकाई की प्रकृति का खुद ही न्याय कर पाते, खासकर उनके ईश्वरीय उद्देश्य के प्रचार के कारण पहले से मौजूद न्याय के संबंध में, तो वे युगांतिक न्याय से बचने के लिए कार्य करते। जिससे डरना चाहिए वह आ रहा है। आने वाला न्यायी परमेश्वर के राज्य के राजा के रूप में आ रहा है।

जैसा कि हम इसे देखते हैं, जो यीशु की शिक्षाओं में बहुत, बहुत कठोर लगता है, जो बहुत, बहुत मांग करने वाला, काफी खिंचाव वाला लगता है, अन्य रिश्तों से ऊपर परमेश्वर के साथ रिश्ते को प्राथमिकता देने की मांग। लेकिन आप देखिए, यीशु आपके जीवन के हर पहलू में रुचि रखते हैं। इसलिए, जब वह आपको शिष्यत्व में बुलाता है, तो वह आपको यह जानते हुए बुला रहा है कि जब आप शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, तो वह बाकी सभी को काम पर लगा देगा।

यह हमेशा सुखद नहीं होगा, लेकिन वह आपको अन्य चीजें देगा जिनकी आपको आवश्यकता हो सकती है। क्योंकि जब न्याय का परमेश्वर आएगा, तो यह कहने का कोई बहाना नहीं होगा कि, ओह, ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरे पास मेरे परिवार के कारण समय नहीं है। ओह, मेरे पास x, y, z के कारण समय नहीं है, जैसा कि हम बाद की शिक्षाओं में देखेंगे।

नहीं, उनका कहना है कि ये बहाने नहीं चलेंगे। इसलिए अब कॉल आ गई है। जवाब देने का समय अब आ गया है।

यीशु के लिए निर्णय का समय अब आ गया है। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि जब आप यह वीडियो देखें और इस चर्चा में शामिल हों तो आप घबराएँ नहीं, यदि आप पहले से ही यीशु के अनुयायी नहीं हैं, तो शायद यीशु आपसे बहुत कुछ माँग रहे हैं। लेकिन समझें कि उनका क्या मतलब है।

अगर हम अपने जीवन के हर हिस्से में ईश्वर की भागीदारी चाहते हैं, तो बदले में ईश्वर हमारी प्रतिबद्धता, निष्ठा या वफ़ादारी की मांग करता है और इसकी अपेक्षा करता है। वह केवल उन लोगों का न्याय करने आता है जो अपनी प्रतिबद्धता और अपनी सेवा में विफल रहे हैं। और दंडात्मक प्रतिशोध के साथ उनका न्याय करता है।

वह उन लोगों को पुरस्कृत करने और सम्मानित करने के लिए आता है जो वफ़ादार हैं। वह आपको और मुझे हमारे काम में, हमारी सेवा में, परमेश्वर की दुनिया में मसीह को जानने की हमारी प्रतिबद्धता में वफ़ादार, निष्ठावान, मेहनती पा सकता है। इस व्याख्यान को सुनने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

और मैं आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको आशीर्वाद देगा और यीशु के साथ आपके चलने को समृद्ध करेगा। धन्यवाद।

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 21 है। डरने वाले से सावधान रहें। लूका 12:35-59।